चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम ..... अमर उजाला .....

दिनांक 29.5.2019 पृष्ठ सं. ..6..... कॉलम ..6-8.....

किसानों को ज्वार की खेती करने के लिए प्रोत्साहित करने की जरूरत : डॉ. दिनेश

एचएयू में अखिल भारतीय अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की 49वीं बैठक

अमर उजाला ब्यूरो

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में तीन दिवसीय अखिल भारतीय समान्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की 49वीं समूह बैठक हुई। बैठक हकृवि के आनुवंशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग द्वारा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मिल्लट रिसर्च हैदराबाद के सहयोग से हुई। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के एडीजी (खाद्य एवं चारा फसलें) डॉ. दिनेश कुमार ने इसका उद्घाटन किया।

उन्होंने देश में ज्वार फसल के अंतर्गत क्षेत्र को बढ़ाए जाने पर बल दिया। उन्होंने कहा विभिन्न चारा फसलों विशेषकर ज्वार की उन्नत किस्में विकसित करके इनका उत्पादन बढ़ाने में कृषि महाविद्यालयों ने बहुत उम्दा कार्य किया है, लेकिन ज्वार के अंतर्गत क्षेत्र में गिरावट चिंता की बात है। एक तरफ जहां ज्वार पशुओं के लिए चारा आपूर्ति के लिए महत्वपूर्ण है, वहीं दूसरी तरफ उद्योग में भी इसकी मांग बढ़ रही है। इस परिस्थिति में किसानों को ज्वार की खेती के लिए प्रोत्साहित करने के साथ ज्वार की पौष्टिक और अधिक उत्पादन क्षमता वाले संकर विकसित करने की आवश्यकता है।

नेशनल सीड्स कार्पोरेशन के अध्यक्ष एवं प्रबंधक निदेशक डॉ. विनोद गौड़ ने कहा कि सरकार ने वर्ष 2022 तक किसानों की आमदनी दोगुना करने का जो लक्ष्य रखा है, उसे पूरा करने में ज्वार जैसी कम इनपुट आवश्यकता वाली फसलें बहुत उपयोगी हो सकती हैं। सरकार ज्वार जैसे मोटे अनाज वाली फसलों को ज्यादा पौष्टिक बनाए जाने पर केंद्रित कर रही है, इसलिए मोटे अनाज पर अनुसंधान के लिए सरकार की ओर से ज्यादा आर्थिक मदद मिलने की संभावना है।

एचएयू में वैज्ञानिकों को सम्मानित करते मुख्य अतिथि डॉ. दिनेश कुमार व अन्य।

भारतीय कंधन अनुसंधान संस्थान हैदराबाद के निदेशक डॉ. विलास ए. तोपनी ने इस परियोजना की वर्ष 2018-19 की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए कहा कि ज्वार के अंतर्गत क्षेत्र में करीब 65 प्रतिशत की गिरावट होने के बावजूद इसके उत्पादन में तीन गुणा से अधिक वृद्धि हुई है। फिलहाल देश में कंधन का कुल उत्पादन करीब 17 मीट्रिक टन है, जिसको बढ़ाकर 30 मीट्रिक टन करने की जरूरत है। इसके लिए इन फसलों के क्षेत्र में और गिरावट को रोकने के साथ ज्वार की ज्यादा पौष्टिक और संकर किस्मों के विकास पर जोर दिया गया है। आगामी तीन साल में किसानों को बेहतर संकर मिलने की आशा है। हकृवि के अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने कहा कि हरियाणा में 3.91 लाख हेक्टेयर भूमि में ज्वार की काश्त की जा रही है। इस क्षेत्र में और वृद्धि की संभावना नहीं है, इसलिए इसकी पैदावार केवल उन्नत किस्मों से संभव है। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने चारा फसलों की कुल 42 किस्में विकसित की हैं, जो किसानों में बहुत लोकप्रिय हैं। समारोह को डॉ. प्रभाकर भट्ट, डॉ. केएस ग्रेवाल ने भी संबोधित किया। इस दौरान परियोजना के अकोला, कोयंबटूर और पंत नगर केंद्रों के साथ ज्वार फसल पर श्रेष्ठ अनुसंधान करने वाले विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुल आठ वैज्ञानिकों को सम्मानित किया गया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम ....पंजाब केसरी....
दिनांक 29.5.2019. पृष्ठ सं. 2 ..... कॉलम 1-5.........

मोटे अनाज पर अनुसंधान के लिए सरकार की ओर से ज्यादा आर्थिक मदद मिलने की सम्भावना : गौड़

अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की 49वीं समूह बैठक शुरू

हिसार, 28 मई (ब्यूरो): चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में तीन दिवसीय अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की 49वीं समूह बैठक आरंभ हुई। यह संगोष्ठी विश्वविद्यालय के आनुवंशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग द्वारा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के इण्डियन इंस्टिट्यूट ऑफ मिल्लट रिसर्च, हैदराबाद के सहयोग से आयोजित की गई है, जिसका भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के ए.डी.जी. (खाद्य एवं चारा फसलें) डा. दिनेश कुमार ने उद्घाटन किया। उन्होंने देश में ज्वार फसल के अंतर्गत क्षेत्र को बढ़ाए जाने पर बल दिया। विशिष्ट अतिथि एवं नैशनल सीड्स कार्पोरेशन के अध्यक्ष एवं प्रबंधक निदेशक डा. विनोद गौड़ ने कहा कि सरकार ने वर्ष 2022 तक किसानों की आमदनी दोगुणा करने का जो लक्ष्य रखा है उसे पूरा करने में ज्वार जैसी कम इनपुट आवश्यकता वाली फसलें बहुत उपयोगी हो सकती हैं।

भारतीय कंधन अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद के निदेशक एवं उपरोक्त अनुसंधान परियोजना के समन्वयक डा. विलास ए. तोपनी ने इस परियोजना की वर्ष 2018-19 की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए कहा कि ज्वार के अंतर्गत क्षेत्र में करीब 65 प्रतिशत की गिरावट होने के बावजूद इसके उत्पादन में तीन गुना से अधिक वृद्धि हुई है। हकृवि के अनुसंधान निदेशक डा. एस.के. सहरावत ने कहा कि हरियाणा में 3.91 लाख हैक्टेयर भूमि में ज्वार की काश्त की जा रही है। इस क्षेत्र में और वृद्धि की संभावना नहीं है इसलिए इसकी पैदावार केवल उन्नत किस्मों से संभव है। उन्होंने कहा इस विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने चारा फसलों की कुल 42 किस्में विकसित की हैं जो किसानों में बहुत लोकप्रिय हैं।

समारोह को उपरोक्त परियोजना के पूर्व समन्वयक डा. प्रभाकर भट्ट और एग्रीकल्चर कालेज के डीन डा. के.एस. ग्रेवाल ने भी संबोधित किया। मंच पर पौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष एवं इस बैठक के संयोजक डा. आई.एस. पंवार भी उपस्थित थे। इस मौके पर आई आई एम आर, हैदराबाद और हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा ज्वार फसल पर प्रकाशित पुस्तकों का विमोचन किया गया। इनके अतिरिक्त उपरोक्त परियोजना के अकोला, कोयम्बटूर और पंतनगर केन्द्रों के साथ-साथ ज्वार फसल पर श्रेष्ठ अनुसंधान करने वाले विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुल 8 वैज्ञानिकों को सम्मानित किया गया।

मुख्यातिथि वैज्ञानिकों को सम्मानित करते हुए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम ....हरि भूमि........

दिनांक ..29.5.2019.. पृष्ठ सं. ..14.... कॉलम ...3-8...

कम इनपुट वाली फसलें कर सकती है किसान की इंकम डबल

ज्वार की चारे के अलावा उद्योगों में बढ़ रही डिमांड

- हकृवि में अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना की 49वीं समूह की बैठक का आयोजन

हरिभूमि न्यूज ⏩ हिसार

हकृवि में आज तीन दिवसीय अखिल भारतीय समान्वित अनुसंधान परियोजना की 49वीं समूह बैठक आरंभ हुई। यह संगोष्ठी विश्वविद्यालय के आनुवंशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग द्वारा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ मिल्लट रिसर्च, हैदराबाद के सहयोग से आयोजित की गई है जिसका भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के एडीजी खाद्य एवं चारा फसलें डॉ. दिनेश कुमार ने उद्घाटन किया। उन्होंने कहा एक तरफ जहां ज्वार पशुओं के लिए चारा आपूर्ति के लिए महत्वपूर्ण है वहीं उद्योग में भी इसकी मांग बढ़ रही है।

विशिष्ट अतिथि नेशनल सीड्स कार्पोरेशन के अध्यक्ष एवं प्रबंधक निदेशक डॉ. विनोद गौड़ ने कहा कि सरकार ने वर्ष 2022 तक किसानों की आमदनी दोगुणा करने का जो लक्ष्य रखा है उसे पूरा करने में वार जैसी कम इनपुट आवश्यकता वाली फसलें बहुत उपयोगी हो सकती हैं। उन्होंने कहा सरकार वार जैसे मोटे अनाज वाली फसलों को ज्यादा पौष्टिक बनाए जाने पर केन्द्रित कर रही है इसलिए मोटे अनाज पर अनुसंधान के लिए सरकार की ओर से ज्यादा आर्थिक मदद मिलने की संभावना है। उन्होंने वार पर अखिल भारतीय अनुसंधान परियोजना के तहत अब तक हुए अनुसंधानों की प्रशंसा की।

हिसार। पुस्तक का विमोचन करते मुख्य अतिथि।

65 फीसदी गिरावट के बावजूद तीन गुणा उत्पादन

भारतीय कंधन अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद के निदेशक एवं उपरोक्त अनुसंधान परियोजना के समन्वयक डॉ. विलास ए. तोपनी ने इस परियोजना की वर्ष 2018-19 की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए कहा कि ज्वार के अंतगर्त क्षेत्र में करीब 65 प्रतिशत की गिरावट होने के बावजूद इसके उत्पादन में तीन गुणा से अधिक वृद्धि हुई है। उन्होंने कहा फिलहाल देश में कंधन का कुल उत्पादन करीब 17 मीट्रिक टन है जिसको बढ़ाकर 30 मीट्रिक टन करने की जरूरत है। इसके लिए इन फसलों के क्षेत्र में और गिरावट को रोकने के साथ वार की ज्यादा पैष्टिक और संकर किस्मों के विकास पर जोर दिया गया है। आगामी तीन साल में किसानों को बेहतर संकर मिलने की आशा है।

3.91 लाख हैक्टेयर में ज्वार की काश्त

हकृवि के अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने कहा कि हरियाणा में 3.91 लाख हैक्टेयर भूमि में ज्वार की काश्त की जा रही है। इस क्षेत्र में और वृद्धि की संभावना नहीं है इसलिए इसकी पैदावार केवल उन्नत किस्मों से संभव है। उन्होंने कहा इस विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने चारा फसलों की कुल 42 किस्में विकसित की हैं जो किसानों में बहुत लोकप्रिय हैं।

तीन पुस्तकों का विमोचन

समारोह को उपरोक्त परियोजना के पूर्व समन्वयक डॉ. प्रभाकर भट्ट और एग्रीकल्चर कालेज के डीन डॉ. केएस ग्रेवाल ने भी संबोधित किया। मंच पर पौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष एवं इस बैठक के संयोजक डॉ. आईएस पंवार भी उपस्थित थे। इस मौके पर आई आई एम आर, हैदराबाद और हकृवि के वैज्ञानिकों द्वारा वार फसल पर प्रकाशित क्रमशः तीन और एक पुस्तकों का विमोचन किया गया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम दैनिक भास्कर

दिनांक 29.5.2019 पृष्ठ सं. 5 कॉलम 3-6

बिना पेस्टीसाइड के भी चारा उगा सकते हैं किसान फिर भी जहरयुक्त चारा खा रहे हमारे दुधारू पशु

ऐसे पशुओं से मिलने वाले प्रोडक्ट भी सेहत के लिए हानिकारक

भास्कर न्यूज | हिसार

एचएयू में मंगलवार को तीन दिवसीय अखिल भारतीय समान्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की 49वां समूह बैठक हुई। इसमें हैदराबाद की इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मिल्लट रिसर्च सहित देशभर से वैज्ञानिक एकत्रित हुए। यहां वैज्ञानिकों ने बताया कि खेतों की पेस्टीसाइड का प्रयोग करना किसान की आदत में आ चुका है। चारा की फसल में पेस्टीसाइड का प्रयोग न के बराबर किया जाता है, इसके बावजूद खेतों में पेस्टीसाइड डाला जा रहा है। यह पशु ही नहीं लोगों के स्वास्थ्य के लिए भी बहुत हानिकारक है। क्योंकि इन पशुओं से मिलने वाले प्रोडक्ट में पेस्टीसाइड का असर साफ दिखाई देता है। इसलिए यह दल किसानों को विभिन्न राज्यों में जाकर चारा फसलों में पेस्टीसाइड का प्रयोग न करने के बारे में बता रहा है। इस कॉन्फ्रेंस में विवि का आनुवंशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग भी शामिल रहा। इसमें मुख्य रूप से भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के एडीजी (खाद्य एवं चारा फसलें) डॉ. दिनेश कुमार शामिल हुए।

एचएयू में अखिल भारतीय समान्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की 49वीं समूह बैठक में उपस्थित वैज्ञानिक।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम दैनिक जागरण

दिनांक 29.5.2019 पृष्ठ सं. 5 कॉलम 6-8

हरियाणा में चारा उत्पादन की 40 फीसद कमी, दक्षिण भारत से बीज तैयार होकर जा रहा पाकिस्तान

संदीप विश्नोई, हिसार

देश में सात राज्य ऐसे हैं, जहां जरूरत के अनुसार पशुओं के चारे का उत्पादन हो रहा है, लेकिन हरियाणा जैसे हरित प्रदेश में इसका उत्पादन आवश्यकता से 40 फीसद कम है। इसका मुख्य कारण बीज उपलब्ध न होना है। इसकी वजह यह है कि ज्वार के बीज का उत्पादन दक्षिण में होता है और फिर यह उत्तर से होते हुए पाकिस्तान और बांग्लादेश चला जाता है। यह कहना है इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मिलेट रिसर्च हैदराबाद के निदेशक डा. विलास ए तोनापी का। वह चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विवि में आयोजित तीन दिवसीय अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की 49वीं समूह बैठक के दौरान पत्रकारों से बातचीत कर रहे थे।

डा. तोनापी ने कहा कि ऐसा नहीं है कि बीज की कमी दूर नहीं हो सकती, बस नेटवर्किंग की जरूरत है। सरकार इसके लिए पहल करे, नेटवर्क बनाए और बताए कि बीज की कितनी डिमांड है, उसके मुताबिक उत्पादन किया जाए। यह संगोष्ठी विवि के आनुवंशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग द्वारा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ मिल्लट रिसर्च, हैदराबाद के सहयोग से आयोजित की गई है।

किसान बीज का खुद करें उत्पादन

डा. तोनापी ने कहा कि हरियाणा के किसान भी गुणवत्ता वाले बीज का उत्पादन करें। बस जरूरत सरकार के प्रोत्साहन की है। सरकार नेटवर्किंग शुरु करे और इसके लिए पहल करे। यह हरियाणा के किसानों के लिए एक अवसर भी है। इससे पहले एक जरूरत यह है कि किसानों को उच्चकोटि की वैरायटी से रूबरू कराया जाए।

अब न्यूट्रिशनल सिक्यारिटी के साथ चारा फसलों पर भी फोकस

नेशनल सीड्स कारपोरेशन के अध्यक्ष एवं प्रबंधक निदेशक डा. विनोद गौड़ ने कहा कि सरकार ज्वार जैसे मोटे अनाज वाली फसलों को ज्यादा पौष्टिक बनाए जाने पर ध्यान केंद्रित कर रही है, इसलिए मोटे अनाज पर अनुसंधान के लिए सरकार की ओर से ज्यादा आर्थिक मदद मिलने की संभावना है। उन्होंने बताया कि पहले हमारा ध्यान फूड सिक्योरिटी पर था, लेकिन अब यह न्यूट्रिशनल सिक्योरिटी पर हो गया है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम ....
दिनांक 28.5.2019 पृष्ठ सं. 6 कॉलम 1-6

ज्वार के अंतर्गत क्षेत्र में गिरावट चिंता की बात : कुमार

हिसार/28मई/रिपोर्टर

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आज तीन दिवसीय अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की समूह बैठक आरंभ हुई। यह संगोष्ठी विश्वविद्यालय के आनुवंशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग द्वारा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के इण्डियन इंस्टिट्यूट ऑफ मिल्लट रिसर्च, हैदराबाद के सहयोग से आयोजित की गई है जिसका भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के एडीजी (खाद्य एवं चारा फसलें) डॉ. दिनेश कुमार ने उद्घाटन किया। उन्होंने देश में ज्वार फसल के अंतर्गत क्षेत्र को बढ़ाए जाने पर बल दिया। उन्होंने कहा विभिन्न चारा फसलों विशेषकर ज्वार की उनत किस्में विकसित करके इनका उत्पादन बढ़ाने में कृषि महाविद्यालयों ने बहुत उम्दा कार्य किया है परन्तु ज्वार के अंतर्गत क्षेत्र में गिरावट चिंता की बात है। उन्होंने कहा एक तरफ जहां ज्वार पशुओं के लिए चारा आपूर्ति के लिए महत्वपूर्ण है वहीं दूसरी तरफ उद्योग में भी इसकी मांग बढ़ रही है। इस परिस्थिति में किसानों को ज्वार की खेती के लिए प्रोत्साहित करने के साथ ज्वार की पौष्टिक और अधिक उत्पादन क्षमता वाले संकर विकसित करने की जरूरत है।

नेश्नल सीड्स कॉर्पोरेशन के अध्यक्ष एवं प्रबंधक निदेशक डॉ. विनोद गौड़ जोकि इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि थे, ने कहा कि सरकार ने वर्ष 2022 तक किसानों की आमदनी दोगुणा करने का जो लक्ष्य रखा है उसे पूरा करने में ज्वार जैसी कम इनपुट आवश्यकता वाली फसलें बहुत उपयोगी हो सकती हैं। उन्होंने कहा सरकार ज्वार जैसे मोटे अनाज वाली फसलों को ज्यादा पौष्टिक बनाए जाने पर ध्यान केन्द्रित कर रही है इसलिए मोटे अनाज पर अनुसंधान के लिए सरकार की ओर से ज्यादा आर्थिक मदद मिलने की संभावना है। उन्होंने ज्वार पर अब तक हुए अनुसंधानों की प्रशंसा की।

भारतीय कंधन अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद के निदेशक एवं उपरोक्त अनुसंधान परियोजना के समन्वयक डॉ. विलास ए तोपनी ने कहा कि ज्वार के अंतगर्त क्षेत्र में करीब 65 प्रतिशत की गिरावट होने के बावजूद इसके उत्पादन में तीन गुणा से अधिक वृद्धि हुई है। उन्होंने कहा फिलहाल देश में कंधन का कुल उत्पादन करीब 17 मीट्रिक टन है जिसको बढ़ाकर 30 मीट्रिक टन करने की जरूरत है। इसके लिए इन फसलों के क्षेत्र में और गिरावट को रोकने के साथ ज्वार की ज्यादा पौष्टिक और संकर किस्मों के विकास पर जोर दिया गया है। आगामी तीन साल में किसानों को बेहतर संकर मिलने की आशा है। हकृवि के अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने

कहा कि हरियाणा में 3.91 लाख हैक्टेयर भूमि में ज्वार की काश्त की जा रही है। इस क्षेत्र में और वृद्धि की संभावना नहीं है इसलिए इसकी पैदावार केवल उन्नत किस्मों से संभव है। उन्होंने कहा इस विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने चारा फसलों की कुल 42 किस्में विकसित की हैं जो किसानों में बहुत लोकप्रिय हैं। समारोह को उपरोक्त परियोजना के पूर्व समन्वयक डॉ. प्रभाकर भट्ट और एग्रीकल्चर कॉलेज के डीन डॉ. केएस ग्रेवाल ने भी संबोधित किया। मंच पर पौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष एवं इस बैठक के संयोजक डॉ. आईएस पंवार भी उपस्थित थे।

इस मौके पर आई आई एम आर, हैदराबाद और हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा ज्वार फसल पर प्रकाशित क्रमश: तीन और एक पुस्तकों का विमोचन किया गया। इनके अतिरिक्त उपरोक्त परियोजना के अकोला, कोंयबटूर और पंतनगर केन्द्रों के साथ-साथ ज्वार फसल पर श्रेष्ठ अनुसंधान करने वाले विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुल आठ वैज्ञानिकों को सम्मानित किया गया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम ..... सिटी प्लस .....

दिनांक 28.5.2019 पृष्ठ सं. ...2..... कॉलम 1-4.....

हकृवि में तीन दिवसीय अखिल भारतीय समान्वित अनुसंधान परियोजना पर संगोष्ठी का आयोजन

सिटी प्लस न्यूज, हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आज तीन दिवसीय अखिल भारतीय समान्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की 49वीं समूह बैठक आरंभ हुई। यह संगोष्ठी विश्वविद्यालय के आनुवंशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा अनुभाग द्वारा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के इण्डियन इंस्टिट्यूट ऑफ मिलेट्स रिसर्च, हैदराबाद के सहयोग से आयोजित की गई है जिसका भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के एडीजी (खाद्य एवं चारा फसलें) डॉ. दिनेश कुमार ने उद्घाटन किया।

उन्होंने देश में ज्वार फसल के अंतर्गत क्षेत्र को बढ़ाए जाने पर बल दिया। उन्होंने कहा विभिन्न चारा फसलों विशेषकर ज्वार की उन्नत किस्में विकसित करके इनका उत्पादन बढ़ाने मे कृषि महाविद्यालयों ने बहुत उम्दा कार्य किया है परन्तु ज्वार के अंतर्गत क्षेत्र में गिरावट चिंता की बात है। उन्होंने कहा एक तरफ जहां ज्वार पशुओं के लिए चारा आपूर्ति के लिए महत्वपूर्ण है वही दूसरी तरफ उद्योग में भी इसकी मांग बढ़ रही है। इस परिस्थिति में किसानों को ज्वार की खेती के लिए प्रोत्साहित करने के साथ ज्वार की पोष्टिक और अधिक उत्पादन क्षमता

हिसार। उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि डॉ. दिनेश कुमार एवं अन्य पुस्तक का विमोचन करते हुए।

वाले संकर विकसित करने की आवश्यकता है।

नेशनल सीड्स कार्पोरेशन के अध्यक्ष एवं प्रबंधक निदेशक डॉ. विनोद गौड़ जोकि इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि थे, ने कहा कि सरकार ने वर्ष 2022 तक किसानों की आमदनी दोगुना करने का जो लक्ष्य रखा है उसे पूरा करने में ज्वार जैसी कम इनपुट आवश्यकता वाली फसलें बहुत उपयोगी हो सकती है। हकृवि के अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने कहा कि हरियाणा में 3.91 लाख हैक्टेयर भूमि में ज्वार की काश्त की जा रही है। इस क्षेत्र में और वृद्धि की संभावना नहीं है इसलिए इसकी पैदावार केवल उन्नत किस्मों से संभव है।

समारोह को उपरोक्त परियोजना के पूर्व समन्वयक डॉ. प्रभाकर भट्ट और एग्रीकल्चर कॉलेज के डीन डॉ. केएस ग्रेवाल ने भी संबोधित किया। मंच पर पौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष एवं इस बैठक के संयोजक डॉ. आई.एस. पंवार भी उपस्थित थे। इस मौके पर आई आई एम आर, हैदराबाद और हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा ज्वार फसल पर प्रकाशित पुस्तकों का विमोचन किया गया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम निष्पक्ष शक्ति टाइम्स
दिनांक 28.5.2019 पृष्ठ सं. 3 कॉलम 2-5

मोटे अनाज पर अनुसंधान के लिए सरकार की ओर से ज्यादा आर्थिक मदद मिलने की संभावना : गौड़

हिसार, 28 मई (निस)। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में तीन दिवसीय अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की 49वीं समूह बैठक आरंभ हुई। यह संगोष्ठी विश्वविद्यालय के आनुवंशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के चारा

अखिल भारतीय समान्वित अनुसंधान परियोजना (ज्वार) की 49वीं समूह बैठक आरंभ

अनुभाग द्वारा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के इण्डियन इंस्टिट्यूट ऑफ मिलट्स रिसर्च, हैदराबाद के सहयोग से आयोजित की गई है जिसका भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के एडीजी (खाद्य एवं चारा फसलें) डॉ. दिनेश कुमार ने उद्घाटन किया। उन्होंने देश में ज्वार फसल के अंतर्गत क्षेत्र को बढ़ाए जाने पर बल दिया। उन्होंने कहा विभिन्न चारा फसलों विशेषकर ज्वार की उन्नत किस्में विकसित करके इनका उत्पादन बढ़ाने में कृषि महाविद्यालयों ने बहुत उम्दा कार्य किया है परन्तु ज्वार के अंतर्गत क्षेत्र में गिरावट चिंता की बात है। उन्होंने कहा एक तरफ जहां ज्वार पशुओं के लिए चारा आपूर्ति के लिए महत्वपूर्ण है वहीं दूसरी तरफ उद्योग में भी इसकी मांग बढ़ रही है। इस परिस्थिती में किसानों को ज्वार की खेती के लिए प्रेत्साहित करने के साथ ज्वार की पौष्टिक और अधिक उत्पादन क्षमता वाले संकर विकसित करने की आवश्यकता है।

नेशनल सीड्स कार्पोरेशन के अध्यक्ष एवं प्रबंधक निदेशक डॉ. विनोद गौड़ जोकि इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि थे, ने कहा कि सरकार ने वर्ष 2022 तक किसानों की आमदनी दोगुणा करने का जो लक्ष्य रखा है उसे पूरा करने में ज्वार जैसी कम इनपुट आवश्यकता वाली फसलें बहुत उपयोगी हो सकती हैं। उन्होंने कहा सरकार ज्वार जैसे मोटे अनाज वाली फसलों को ज्यादा पौष्टिक बनाए जाने पर केन्द्रित कर रही है इसलिए मोटे अनाज पर अनुसंधान के लिए सरकार की ओर से ज्यादा आर्थिक मदद मिलने की संभावना है। उन्होंने ज्वार पर अखिल भारतीय अनुसंधान परियोजना के तहत अब तक हुए अनुसंधानों की प्रशंसा की।

भारतीय कंधन अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद के निदेशक एवं उपरोक्त अनुसंधान परियोजना के समन्वयक डॉ. विलास ए. तोपनी ने इस परियोजना की वर्ष 2018-19 की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए कहा कि ज्वार के अंतर्गत क्षेत्र में करीब 65 प्रतिशत की गिरावट होने के बावजूद इसके उत्पादन में तीन गुणा से अधिक वृद्धि हुई है। उन्होंने कहा फिलहाल देश में कंधन का कुल उत्पादन करीब 17 मीट्रिक टन है जिसको बढ़ाकर 30 मीट्रिक टन करने की जरूरत है। इसके लिए इन फसलों के क्षेत्र में और गिरावट को रोकने के साथ ज्वार की ज्यादा पैष्टिक और संकर किस्मों के विकास पर जोर दिया गया है। आगामी तीन साल में किसानों को बेहतर संकर मिलने की आशा है।

हकृवि के अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने कहा कि हरियाणा में 3.91 लाख हैक्टेयर भूमि में ज्वार की काश्त की जा रही है। इस क्षेत्र में और वृद्धि की संभावना नहीं है इसलिए इसकी पैदावार केवल उन्नत किस्मों से संभव है। उन्होंने कहा इस विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने चारा फसलों की कुल 42 किस्में विकसित की हैं जो किसानों में बहुत लोकप्रिय हैं। समारोह को उपरोक्त परियोजना के पूर्व समन्वयक डॉ. प्रभाकर भट्ट और एग्रीकल्चर कालेज के डीन डॉ. के.एस. ग्रेवाल ने भी संबोधित किया। मंच पर पौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष एवं इस बैठक के संयोजक डॉ. आई.एस. पंवार भी उपस्थित थे।

इस मौके पर आईआईएमआर, हैदराबाद और हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा ज्वार फसल पर प्रकाशित क्रमशः तीन और एक पुस्तकों का विमोचन किया गया। इनके अतिरिक्त उपरोक्त परियोजना के अकोला, कोयम्बटूर और पंतनगर केन्द्रों के साथ-साथ ज्वार फसल पर श्रेष्ठ अनुसंधान करने वाले विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुल आठ वैज्ञानिकों को सम्मानित किया गया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम ..... पाञ्चजन्य .....

दिनांक 28.5.2019 पृष्ठ सं. 3 कॉलम 2-4

अंतरराष्ट्रीय बाजार के नियमों को समझकर किसान उठाएं ज्यादा मुनाफा

हिसार, 28 मई (निस) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में प्रोडयुस सेफटी एलांन्स ग्रोवर ट्रेनिंग एंड गुड एग्रीकल्चरल प्रेक्टिसस विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला अमेरिका के लुसियाना स्टेट विश्वविद्यालय के एजी सैंटर के सहयोग से आयोजित की गई है। इसका मुख्य उद्देश्य किसानों को कृषि उत्पाद दूसरे देशों में भेजने की बारिकियां सीखाना व प्रोत्साहित करना था। इस कार्यशाला में हरियाणा के विभिन्न जिलों से आए किसानों ने भाग लिया। कार्यशाला में कुलपति प्रो. के.पी. सिंह मुख्य अतिथि थे। प्रो. सिंह ने कहा कि हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में एग्री बिजनेस इन्क्यूबेशन सैंटर की स्थापना की गई है जिसमें किसानों को अपने उत्पाद की पैकेजिंग, भंडारण, परिक्षण, विश्लेषण की प्रक्रिया, आयात-निर्यात के बारे में जानकारी दी जाएगी। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में अंतराष्ट्रीय स्तर की केमिकल टेस्टिंग लैब उपलब्ध है जो किसानों के उत्पाद में रासायन की प्रतिशत उपलब्धता को बता सकती है। जिससे किसान अपने उत्पाद को अंतराष्ट्रीय स्तर पर बिना रोक टोक के बेच सकता है। उन्होंने अंतराष्ट्रीय बाजार की प्रक्रिया पर समग्र सिफारिशे विकसित करने की जरूरत पर जोर दिया। कुलपति ने कहा कि हरियाणा के किसान बहुत मेहनती व जागरूक है। उन्होंने वैज्ञानिक सलाह व तकनीकी सहायता से अपने उत्पाद को बढ़ाने में सफलता हासिल की है। लेकिन बाजार की सही समझ न होने से अपने उत्पाद का सही बाजार मुल्य प्राप्त करने में असमर्थ है। उन्होंने कहा कि उत्पादकता में हम आत्मनिर्भर हो गए है पर किसान को सही कीमत न मिलना एक बड़ी समस्या है। इसलिए अंतरराष्ट्रीय बाजार के नियमों को समझकर अपने उत्पाद को दूसरे देशों में भेजकर अच्छा मुनाफा कमाया जा सकता है। अमेरिका के लुसियाना स्टेट विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक, डॉ. अच्युत अधिकारी ने बताया कि यह कार्यशाला प्रोडूस सेफ्टी एलांन्स ग्रौवर ट्रेनिंग एंड गुड एग्रीकल्चरल प्रेकटिसिस विषय पर आयोजित की गई एशिया में पहली कार्यशाला है। उन्होंने बताया कि ताजे फल व सब्जियों को खराब होने से पहले उचित मुल्य पर उपभोक्ता के पास पहुंचना अत्यंत आवश्यक है। इस अवसर पर हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार, कुलपति के विशेष सलाहकार, डीन, डायरेक्टर, विभागाध्यक्ष व अन्य अधिकारी उपस्थित थे।